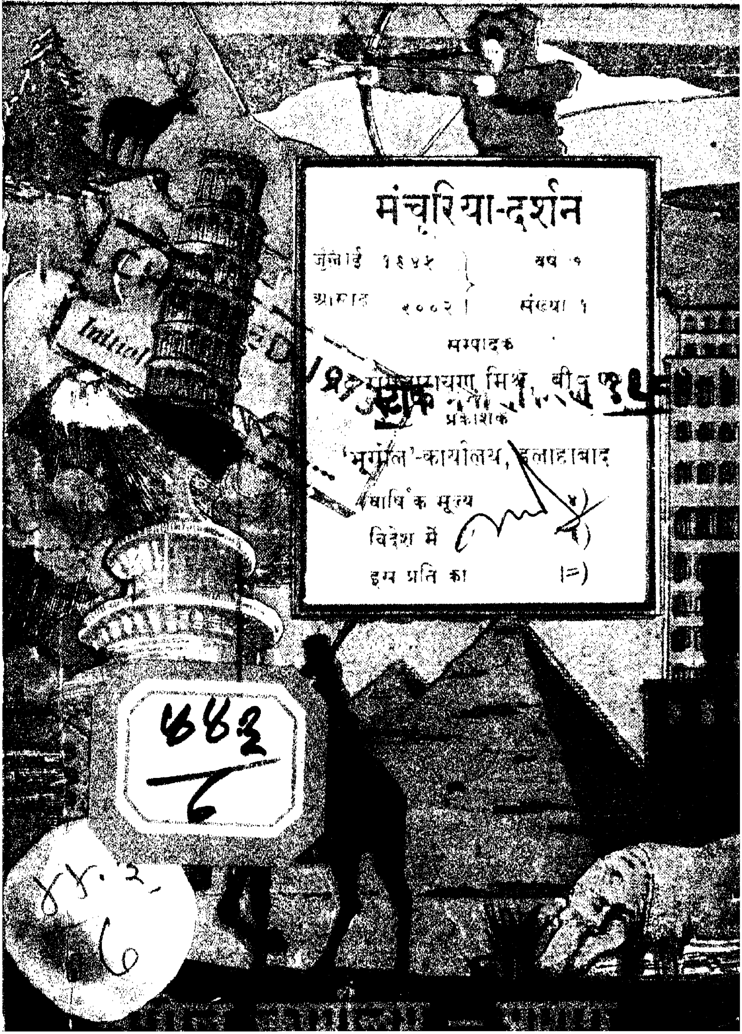
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६८



मंचूरिया-दर्शन

जुलाई १९४५ | वर्ष १
आषाढ़ २००२ | संख्या १

सम्पादक
रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

स्थिति

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

मंचूकुओ का पुराना नाम मंचूरिया है। मंचूरिया नाम चीन के एक तातार मंचू वंश की स्मृति में पड़ा जिसने १६४४ ई० में चीन को जीता था। मंचू का अर्थ शुद्ध है। इसमें चीन के तीन (फेंगतियन, किरीन और हेलुंग चांग) प्रान्त शामिल थे। मंचूरिया पर चीन का अधिकार था। १६३१ ई० में मुकडन शहर के पास एक रात्रि को साउथ (दक्षिणी) मंचूरियन रेलवे की पटरी पर एक बम फटा। इस लाइन की देख भाल जापानी सिपाही करते थे। उन्होंने सोचा कि यह चीनियों का काम है। पास ही चीनी सिपाहियों की बारकें थीं जहां १०,००० चीनी सिपाही रहते थे। जापानी सिपाहियों ने बम फटने का बहाना लेकर चीनी सिपाहियों पर अचानक आक्रमण कर दिया। बेचारे चीनी सिपाही दंग रह गये। उन्हें यह भी पता न चला कि आक्रमण क्यों हो रहा है। चीनी अफसरों ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि वे बारकों से भाग जावें और लड़ें नहीं। दूसरे दिन सवेरा होते ही मुकडन (राजधानी) पर जापान का अधिकार हो गया। चीनी सरकार डर गई। उसने

लीग आफ नेशन्स (राष्ट्र संघ) को झगड़ा निपटाने के लिये तार दिया। राष्ट्र संघ ने दोनों राज्यों को लड़ाई बन्द करने का आदेश दिया। दोनों ने लड़ाई बन्द करने का वचन दिया। पर जापानी विमान चीनी शहरों पर बम बरसाते रहे। फिर लीग ने एक कमीशन जिसके नेता लार्ड लिटन (अँग्रेज़) थे मंचूरिया को भेजा। पर इससे कोई सुधार न हुआ। जापानी सेना चीनी नगरों पर आक्रमण करती रही। इससे चीनी लोगों में बड़ा रोष फैला। उन्होंने जापान का बहिष्कार आरम्भ कर दिया। १९३२ ई० के जनवरी मास में चीनी भीड़ ने शङ्घाई में कुछ जापानी भिक्षुओं पर आक्रमण किया। एक भिक्षुक को भारी चोट लगी और वह मर गया। जापान ने भारी रकम हर्जाने में मांगी। और कुछ शर्तें पेश कीं। कुछ समय में चीन ने हर्जाना देना स्वीकार कर लिया। पर जापानी बेड़ा शङ्घाई के किलों पर गोले बरसाने लगा। योरपीय जातियों ने अपने अपने देश वासियों की रक्षा के लिये सेनायें भेजीं। ऐसा प्रतीत होने लगा कि विश्वव्यापी युद्ध यहीं से आरम्भ होगा। मार्च मास में युद्ध को बन्द करने के लिये राष्ट्र संघ ने एक

विशेष अधिवेशन किया। इससे जापान के भी कान खड़े हो गये और जापानी सेनापति ने गोला बरसाना बन्द कर दिया। पर जापानी सेना को हटने में दो महीने से भी अधिक लग गये। सितम्बर मास में राष्ट्र संघ ने अपना फैसला तयार कर पाया। फैसले में जापान को दोषी ठहराया गया। जापान ने राष्ट्र संघ से पद त्याग करने की सूचना दी। और चीन में लड़ाई जारी रक्खी। १६३२ ई० में इन तीनों प्रान्तों को मिला कर चीन से पृथक मंचूकुओ नाम का एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। चीनी क्रान्ति के पहले जो चीन का शिशु-सम्राट था उसी पू यी को जापानियों ने १६३४ ई० में इस नये राज्य का सम्राट बनाया। इस नये राज्य में जो नाम के लिये स्वतन्त्र होने पर भी जापान के इशारे से चलता था। इसमें चीन का जहोल प्रान्त भी छीन कर मिला लिया गया। इस नये मंचूकुओ राज्य की राजधानी भी मुकडन से बदल कर चांगचुन में कर दी गई। चांगचुन का नाम बदल कर सिंगकिंग रख दिया गया इस समय इस नये राज्य में सिंगन हेलुंगच्यांग, किरीन, जेहोल और फेंगतियन पांच प्रान्त

शामिल हैं। यह विशाल वनों, नदियों उपजाऊ मैदानों और विषम पर्वतों का देश है। इसकी लम्बाई ८०० मील और चौड़ाई ५०० मील है इसका क्षेत्रफल ४६०३८३ वर्ग मील है जो अपने संयुक्त प्रान्त से चौगुना है। पर इसकी जनसंख्या केवल ३ करोड़ ३६ लाख है। अधिकांश जन संख्या चीनी है। ७ लाख कोरिया वासी और ढाई लाख जापानी हैं। यहां ४३४ अँग्रेज़, ४५६ जर्मन, २५६ अमरीकन और ५०,००० रूसी हैं।

मंचूकुओ के पश्चिम में मङ्गोलिया और चीन देश है। इसके दक्षिण में पोला सागर और कोरिया देश है। इसके पूर्व और उत्तर में सोवियट रूस के प्राइमोस्कीया, अमूर और ट्रान्सबैकाल प्रजातन्त्र (प्रदेश) हैं। मंचूकुओ देश ४० और ५४ उत्तरी अक्षांशों के बीच में स्थित है। इसके पूर्व में ११७ पूर्वी देशान्तर और पश्चिम में १३५ पूर्वी देशान्तर है। अर्गुन, अमूर और उसूरी नदियाँ मंचूकुओ को रूसी साइबेरिया से पृथक करती हैं यालू और तूमेन नदियां काफी दूर तक कोरिया और मंचूकुओ के बीच में सीमा बनाती हैं। पश्चिम की ओर

मंचूरिया-दर्शन

विशाल खिंगन पर्वत मंचूकुओ को मङ्गोलिया से अलग करता है। पूर्व की ओर चांग पाईशान (श्वेत विशाल पर्वत) इसे कोरिया से अलग करता है।

भूरचना

मंचूकुओ का अधिकांश प्रदेश एक विषम चतुर्भुज के आकार का एक निचला मैदान है। मङ्गोलिया का पठारी सिर और खिंगन पर्वत इसे पश्चिम की ओर घेरे हुये है। पूर्व की ओर प्रशान्त महासागर की तटीय श्रेणियां है। उत्तर और दक्षिण की ओर यह मैदान खुला हुआ है। इसके दक्षिण की ओर पीला सागर है। उत्तर की ओर अमूर नदी की घाटी है। पश्चिम की ओर महान खिंगन की श्रेणी लगातार चली गई है। पर यह दुर्गम नहीं है। एक स्थान पर इसकी चौड़ाई केवल दो मील है। रेल मार्ग के लिये खिङ्गन स्टेशन के पास पर्वत को काट कर सुरंग बनाया गया है। पूर्व की ओर पर्वतीय श्रेणी और कम बाधा डालती है। इधर होकर हार्बिन से व्लाडीवोस्टक को रेल मार्ग गया है।

दक्षिण की ओर ल्याओ घाटी में यह मैदान कुछ सिकुड़ गया है। उत्तर की ओर यह अधिक चौड़ा है। यहां मंगोलिया के पठार से लेकर कोरिया और रूस की सीमा तक चला गया है। इस उत्तरी बड़े भाग में बहने वाली नदियां भी अधिक बड़ी हैं। वास्तव में ऊँचे पठार और पर्वतों से आने वाली इन्हीं नदियों ने अपने साथ मिट्टी लेकर इस मैदान को बनाया है।

पाइतोशान (विशाल-श्वेत पर्वत) वास्तव में एक शान्त ज्वालामुखी है। इसकी औसत ऊँचाई ७००० फुट है। इसके बीच में एक बड़ी विचित्र झील है। मंचू लोग इस पर्वत को बड़ा पवित्र मानते थे। इस पर कई प्राचीन पवित्र मन्दिर बने हुये हैं। इसके ढालों से निकल कर यालू नदी पीले सागर में और तूमेन नदी जापान सागर में गिरती है। यह दोनों नदियां कोरिया और मंचूरिया के बीच में सीमा बनाती हैं। पर उत्तर की ओर बहने वाली सुंगारी नदी एक विशाल नदी है। यह चांग पेईशान पर्वत से ८००० फुट की उंचाई पर निकलती है। सांगसिंग के पास सुंगारी नदी में दाहिने किनारे पर हुरका या खुरखा नदी मिलती है जिसके

किनारों पर चीनो लोगों की घनी बस्तियां है। पहले सुंगारी नदी में रूसी स्टीमर चला करते थे और नोनी नदी के किनारे पर बसे हुये शिशिहर नगर तक जाते थे। पर हुरका नदी इतनी उथली और पथरीली है कि इसमें केवल छोटी नावें चल सकती हैं। सुंगारी नदी उत्तर की ओर बहती है। चिलीन नगर (चिलीन प्रान्त की राजधानी) सिंचेंग (पेतूना) और हार्बिन नगरों के समीप बहती हुई सुंगारी नदी मुहाने से ३०० मील की दूरी पर अमूर नदी में मिल जाती है। बाढ़ के समय सुंगारी नदी में अमूर से अधिक पानी रहता है। सुंगारी की दो बड़ी सहायक नदियां हैं। नोनी नदी दक्षिणी हेलुंग च्यांग का पानी बहा लाती है। मूतान क्यांग या हुरका नदी चिलीन प्रान्त का पानी बहा लाती है। निंगूता नगर स्थित है। जहां हुरका नदी सुंगारी में मिलती है वहां दोनों के संगम पर सान-सिंग नगर बसा है। फेंगचिन प्रान्त की प्रधान नदी ल्याओ है। यह मंगोलिया से निकलती है। पहले पूर्व की ओर बहती है। फिर यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। और ल्याओ टंग की खाड़ी में गिरती है।

जो पाहाई की एक शाखा है। अमूर नदी पूर्वी एशिया की सब से बड़ी नदी है। इसका पानी कुछ काला है। है। इसी से चीनी लोग इसे काली नदी कहते हैं। कई सौ मील तक यह मंचूकुओ और साइबेरिया के बीच में सीमा बनाती है। साइबेरिया की ओर कुछ मीलों की दूरी पर गांव या फौजी छावनियां हैं। मंचूकुओ की की ओर इसके किनारे पर सघन वन है। अमूर नदी मंगोलिया से निकल कर उत्तर पूर्व की ओर बहती है। आरम्भ में यह ट्रांसबैकालिया से निकलने वाली शिल्का और खिंगन से निकलने वाली अर्गुन नदियों के मिलने से बनी है। अमूर नदी ३००० मील लम्बी है। इसमें २००० मील तक नावें चल सकती हैं। पर नावें केवल ग्रीष्म ऋतु में मई से अक्तूबर तक चल सकती हैं सरदी के छः महीनों में यह बरफ से जम जाती है। सुंगारी के बाद मंचूकुओ की दूसरी बड़ी नदी उसूरी है यह खानका झील से निकलती और उत्तर की ओर बहती है। खाबरोव्स्क के पास अमूर नदी में मिल जाती है।

उसूरी की दो बड़ी सहायक नदियां सुंगाना और दाओबोहो हैं। जिस प्रदेश में होकर उसूरी नदी बहती

है। उसका दृश्य कई प्रकार का है और बड़ा सुन्दर है। कहा जाता है सृष्टिकर्ता ने पृथ्वी की रचना करके जब सब प्रदेशों में पशु और वृक्ष नियत कर दिये उस समय उसूरी प्रदेश खाली रह गया। तब उसूरी नदी की आत्मा ने व्याकुल होकर सृष्टा से प्रार्थना की। हे प्रभु आपने सब प्रदेशों को नाना प्रकार की भेंटें दी है। केवल मेरे प्रदेश पर ही आपने कृपा नहीं की है। अतः अब आप अपनी बुद्धि और दया के अनुकूल इस प्रदेश को भी सजाइये। इससे प्रसन्न होकर सब स्थानों से थोड़े थोड़े वृक्ष, पशु, पक्षी और रेंगने वाले जन्तु लेकर उसूरी के प्रदेश में फैला दिये। इससे यह प्रदेश बड़ा फला फूला। इसमें जीवन की मात्रा अधिक देख कर कई जातियों के लोग यहां आये। रूसी लोग इस प्रदेश को पूर्व का मोती कहते हैं। मंचूकुओ के वन और पर्वतीय प्रदेश में कई छोटी नदियां हैं। पर्वतीय प्रदेश में शान्त ज्वालामुखी के मुख (क्रेटर) में स्थित मीठे पानी की झील विशेष उल्लेखनीय है। चीनी लोग इसे नागकुंड कहते हैं। मैदान के उत्तरी अधिक चौड़े भाग को बुरेया या लघुखिंगन पर्वत दो भागों में बांट देता है। सुंगारी

एक भाग का पानी उत्तर की ओर बहा ले जाती है। नोनी दूसरे भाग का जल दक्षिण की ओर बहा ले जाती है।

खनिज

मंचूकुओ का अधिकतर प्रदेश प्राचीन आग्नेय या ज्वालामुखी के उद्गार की चट्टानों का बना है। चिलीन प्रान्त के बड़े भाग में लावा के स्तम्भ हैं। चांग पाई शान प्रदेश एक शान्त ज्वालामुखी है। प्राचीन चट्टानों के देश में कई प्रकार के खनिज पाये जाते हैं।

कई छोटी छोटी नदियों की बालू में सोने के कण पाये जाते हैं। यालू नदी की सहायक नदियों, ऊपरी सुंगारी और हेलुंगक्यांग की घाटियों में सोने के कण बालू से धोकर इकट्ठे किये जाते हैं। मंचूकुओ में कोयले की विशाल चट्टाने हैं। कोरियावासी और चीनो लोग चौदहवीं शताब्दी से कुछ न कुछ कोयला निकालते थे। नये ढंग से कोयला निकालने का काम यहां रूसियों ने आरम्भ किया। फिर कोयले की खानें जापानियों के

हाथ में आई। फुशून की कोयले की खानें मुकडन नगर से २२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर हैं। इस कोयले से साउथ मंचूरियन रेलवे लाइन को बड़ी सहायता मिली। फुशून की खानों से प्रतिवर्ष ७० लाख टन कोयला निकाला जाता है। यह कोयले का क्षेत्र पिंजपान की घाटी में स्थित है। यह क्षेत्र १० मील लम्बा और २ मील चौड़ा है। कोयले की तहें १२० से १७५ फुट तक मोटी है। चेन्ताई, येनमीहूं और सैमाची में कोयले की दूसरी खानें हैं। कुछ खानें अन्य स्थानों में भी हैं। यहां की बड़ी खानों में तैत्ज़े और हून घाटियों द्वारा पहुँचना सुगम है।

कोयले के बाद इस देश की दूसरी महत्वपूर्ण खनिज कोयला है। आनशान की लोहे की प्रसिद्ध खान मुकडन से डेरियन (रूसी डाल्नी) को आने वाली रेलवे लाइन के मार्ग में पड़ता है। अधिकतर लोहा यालू और हून नदियों के जल विभाजक में मिलता है। कच्चे लोहे में शुद्ध लोहा कम रहता है। अशुद्ध पदार्थ अधिक रहते हैं। इस लिये व्यर्थ पदार्थ को ढोने का खर्च बचाने के

लिये कच्चा लोहा खानों के पास ही गला कर साफ कर लिया जाता है। पिग आयरन या अधपका लोहा जापान को भेज दिया जाता है। प्रतिवर्ष लगभग ६ लाख टन लोहा निकाला जाता है। कुछ चांदी तांबा और सीसा भी निकाला जाता है। पूर्वी भीतरी मंगोलिया के समीप सोडा तयार किया जाता है। समुद्र तट के पास समुद्र के खारे जल से नमक बनाया जाता है।



जलवायु

मंचूकुओ की जलवायु कुछ नम है। यह नमी ग्रीष्म ऋतु के चार महीनों में दक्षिणी मानसूनी हवाओं के चलने पर और अधिक हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु में ही मंचूकुओ में ८० प्रतिशत वर्षा होती है। ग्रीष्म की मानसूनी हवा जून के अन्त में आती है। जुलाई और अगस्त मनीनों में यह प्रबल रहती है तभी दक्षिणी मंचूरिया में अधिक वर्षा होती है। मंचूकुओ में जापान की अपेक्षा कम वर्षा होती है। मुकडन में वर्ष भर में केवल २६ इंच वर्षा होती है। हार्बिन में १८ इंच वर्षा होती है। अधिक उत्तर में वर्षा की मात्रा और भी कम हो जाती है। शीतकाल ठंडा और प्रायः खुश्क रहता है। वर्ष में केवल १५० से १८० तक ऐसे दिन होते हैं जब पाला नहीं पड़ता है। बरफ तो नहीं गिरती है। पर अधिक ठंड के कारण भूमि की नमी जम कर कड़ी चट्टान के समान हो जाती है। कुछ नदियां भी बरफ से जम जाती हैं। मुकडन का शीतकालीन तापक्रम ११ अंश सेंटी ग्रेड हो जाता है। हार्बिन का शीतकालीन तापक्रम १७ अंश सेंटी ग्रेड रहता है। ग्रीष्म ऋतु में मंचूकुओ का औसत तापक्रम ७० या ७५ अंश फारेन

हाइट रहता है। कहीं कहीं ६० अंश तक हो जाता है। बहुत बड़े भाग में सरदी और गरमी की ऋतु के तापक्रम में भारी अन्तर रहता है। इससे मंचूकुओ की जलवायु विषम अथवा महाद्वीपीय कही जा सकती है। तट पर बेहरिंग प्रणाली की ओर से ठंडी धारा आती है। यह लब्राडोर की धारा से भी अधिक प्रबल है। इस लिये एक ही अंक्षांश में अमरीका के पूर्वी तट की अपेक्षा यहां शीतकाल में अधिक सरदी पड़ती है। दिन और रात के तापक्रम में अधिक अन्तर रहता है। गरमी की ऋतु में दिन के समय तो गरमी रहती है पर रात्रि ठंडी रहती है।



वनस्पति

मंचूकुओ के जिन भागों में वर्षा की कमी है और जहां सरदी और गरमी के तापक्रम में बड़ा अन्तर रहता है वहां बड़े पेड़ों का अभाव है वहां स्टेपी प्रदेश की तरह घास अधिक होती है। जहां वर्षा कुछ अधिक है पर गरमी की ऋतु में गरमी भी अधिक हो जाती है वहां तरह तरह की झाड़ियां और लताएँ हैं। जहां वर्षा की अधिकता है और तापक्रम नीचा रहता है वहां शीतोष्ण कटिबन्ध के वन हैं। पहाड़ी प्रदेश प्रायः सब कहीं ऐसे ही वन से ढके हैं। बहुत ही थोड़े भाग भीतर की ओर अर्द्धमरु प्रदेश हैं।

कृषि

पहाड़ी भागों में दलदलों के समीप चिकनी मिट्टी मिलती है। सूखने पर इसके बड़े कड़े और भारी ढले हो जाते हैं। कुछ पहाड़ी कम चिकनी होती है। मैदान के समीप पहाड़ों की तलहटी में भूरी भूमि पाई जाती है। मैदान में कुछ काली या कार्नोजम मिट्टी मिलती है। जहां पहले वन था वहीं पत्तियों के गिरने और सड़ने से

मिट्टी का रंग कुछ काला पड़ गया। बरगा पठार के कई भागों में भूरी नमकीन मिट्टी मिलती है। पहाड़ी ढालों पर मोटे कण वाली कंकरीली पथरीली भूमि है। नदियों और झीलों के समीप कछारी मिट्टी है। कुछ भागों में हवा के साथ लाई हुई लोयस मिट्टी है।

मंचूकुओ के भिन्न भिन्न भागों में मिट्टी और जलवायु का अन्तर होने से यहां कई प्रकार की उपज होती है।

मंचूकुओ के मध्यवर्ती और दक्षिणी भागों की कुछ घाटियों को छोड़ कर शेष भागों में शीत काल में कोई फसल नहीं बोई जाती है। जुताई का काम ग्रीष्म ऋतु में होता है। वसन्त ऋतु खुश्क होती है। ग्रीष्म ऋतु में बरफ के पिघलने और वर्षा के होने पर भूमि गीली हो जाती है। जई की फसल भीगी हो ज़मीन में बोई जाती है। गरमी की ऋतु में नमी और गरमी की अधिकता होने से पौधे तेजी से बढ़ते है। वसन्त ऋतु में खुश्की की अधिकता होने से न केवल पौधों के बढ़ने में बाधा पड़ती है वरन वनों में आग भी लग जाती है। इससे वन और स्टेपी प्रदेश के बहुत बड़े भाग जल जाते

हैं। जले हुये प्रदेश की भूमि का तापक्रम कुछ बढ़ जाता है।

मंचूकुओ में सोयाबीन बिक्री लिये उगाया जाता है। यहां के निवासी खाने के लिये ज्वार, बाजरा, मक्का, धान, गेहूँ और जौ उगाते हैं। कपास भी उगाई जाती है। ल्याओ, सुंगारी, नोनी और हूनन का लावा प्रदेश अमरीका के प्रेरी प्रदेश के समान उपजाऊ है। जितनी कृषि योग्य भूमि जापान में है उसकी यहां ६ गुनी है। फिर मंचूकुओ में खेती के योग्य जितनी भूमि है उसके केवल ⅓ भाग में खेती होती है। ८ करोड़ से अधिक भूमि यहां खेती के काम आती है। इसमें २ करोड़ एकड़ भूमि सोयाबीन उगाने के काम आती है। ७० लाख एकड़ भूमि में गेहूँ उगाया जाता है। खुले हुये विशाल उपजाऊ भागों में अमरीका के समान मशीनों से खेत जोतने बोने का काम हो सकता है। दक्षिणी भाग में खेती के अतिरिक्त सेब और दूसरे फलों के बगीचे लगाये जा रहे हैं।

सोयाबीन इस देश के लिये बड़ा उपयोगी है। इसका चारा और दलिया बनता है। आटे से रोटी

बनाई जाती है। इसका तेल मक्खन के स्थान पर यहां खाया जाता है। इससे ग्लिसरीन विस्फोटक, बार्निश, स्याही और साबुन आदि भी बनाये जाते हैं। साउथ मंचूरियन रेलवे के खुल जाने से सोयाबीन के निर्यात में अपूर्व वृद्धि हुई। यह चीन, जापान, अमरीका और योरुप को भेजा जाता था। वर्तमान युद्ध से इसका दूसरे देशों में जाना बन्द कर दिया। उत्तरी मंचूरिया और सुंगारी की घाटी में गेहूँ बहुत अधिक होता है। कई प्रकार के जङ्गली पत्ते रेशम के कीड़ों को खिलाये जाते हैं। मंचूकुओ में चरवाही के प्रदेश बहुत हैं। इनमें सुअर, गाय, बैल, घोड़े, भेड़, गधे और खच्चर पाले जाते हैं।

मंचूकुओ का बसना

मंचूकुओं में मनुष्यों का बसना वहां की प्राकृतिक अवस्था ने निर्धारित किया है। यह एक विशाल स्टेपी प्रदेश है। इसके उत्तर और पूर्व की ओर बन है। पश्चिम की ओर यह मध्य एशिया के घास के विशाल प्रदेश की ओर खुला हुआ है और उससे मिला हुआ

है। दत्तिण की ओर एक संकुचित निचले प्रदेश के द्वारा चीन के मध्य कृषि प्रदेश से मिला हुआ है। यह संकुचित मार्ग अधिक समय तक तुंगस लोगों के हाथ में था। तुंगस लोग चीनी लोगों से भिन्न हैं और मंगोल लोगों से मिलते जुलते हैं। ईसा से कई सौ वर्ष पूर्व तुंगस लोग उत्तरी-पूर्वी चीन में रहते थे। उस समय चीनी लोग दक्षिणो पश्चिमी चीन से बढ़ कर यहां नहीं पहुँच पाये थे। जब चीनी लोग यांगज़ी नदी की ओर फैले उसी समय तुंगस लोग उत्तरी बन में फैल गये। उत्तरी भाग में बसने वाले तुंगस लोग घुमक्कड़ शिकारी बने रहे। पर दत्तिणी भाग के तुंगस लोग चीनियों के सम्पर्क में आने पर कृषि और दूसरी कलायें सीख गये। घास के मैदान में रहने वाले तुंगस पक्के घुड़-सवार थे। यह दूध देने वाले पशुओं से दूध निकालना नहीं जानते थे। मंगोलिया के समीप पश्चिमी मंचूरिया के खुश्क प्रदेश में रहने वाले लोग घुमक्कड़ होते हुये भी दूध देने वाले पशुओं का दूध दुहना जान गये थे। सत्रहवीं शताब्दी में मंचू लोग विजयी हुये उन्होंने मंचूरिया पर अधिकार कर लिया। मंचूरिया वास्तव में चीन

का एक प्रकार का पिछला कमरा है। यहां से चीन पर आक्रमण करना सुगम है। इसी मार्ग से कई बार तातारी लोगों ने चीन पर आक्रमण किया था। १७ वीं शताब्दी में मंचू लोगों ने चीन पर आक्रमण किया। इन्हीं लोगों ने १६४४ से १६११ तक चीन पर राज्य किया। यह लोग अपनी सेना में मंचूरिया से रंगरूट भरती किया करते थे। बहुत समय तक चीनी लोगों को मंचूरिया में जाने का निशेध (मनाई) रहा। १७७६ ई० के बाद यह निशेध कुछ ढीला पड़ गया। मंचूरिया में जनसंख्या पहले ही कम थी। रंगरूटों के सेना में भरती होकर चीन में आ जाने से यह जनसंख्या और कम हो गई। पर जब चीनियों को मंचूरिया में जाकर बसने की आज्ञा मिल गई तो मंचूरिया की दशा बदल गई। साधारतया चीनी लोगों को अपने पैत्रिक घर से बड़ा प्रेम होता है। जिस घर में उनके पूर्वजों ने निवास किया उसे वे छोड़ना पसन्द नहीं करते हैं। पर जब चीन की जन संख्या इतनी बढ़ गई कि बहुत से लोग भूखों मरने लगे तब चीन की बढ़ी हुई जनसंख्या मंचूरिया में आकर बसने लगी। मंचूरिया के प्रदेश प्रायः खाली

पड़े थे। चीनी लोगों के यहां बस जाने से १६ वीं शताब्दी के अन्त में मंचूरिया की जनसंख्या डेढ़ करोड़ हो गई। इसमें ८० फीसदी चीनी थे। अधिकतर चीनी पुरुष ही यहां जाते थे। वे मंचू स्त्रियों से ब्याह करके वहीं ठहर जाते थे। इससे अधिकांश मंचू लोगों को उन्होंने अपने में खपा लिया। शुद्ध मंचू लोगों की कुछ टोलियां केवल उत्तरी मंचूरिया और ऐगुन जिले में शेष रह गईं।

१८२१ से १८५१ तक चीनी लोग ल्याओ और सुंगारी की घाटियों में बस गये। अधिकतर चीनी लोग शांटंग और होपे प्रान्तों से आते हैं जहां अकाल (दुर्भिक्ष) अधिक पड़ता है। तैपिंग विद्रोह में २ करोड़ चीनी नष्ट हो गये। इसी समय बहुत से लोग मंचूरिया चले गये। १८७८ ई० में चीनियों को मंचूरिया में बसने से रोकने वाला कानून एक दम टूट गया। चीनी अधिकाधिक संख्या में मंचूरिया में जाने लगे। कुछ लोग फसल कट जाने के बाद मंचूरिया से लौट आते थे अधिकतर लोग वहीं बस जाते थे। यह लोग (मार्च, अप्रैल, मई में) बसन्त ऋतु में जाते थे और शीतकाल

से पूर्व ही लौट आते थे। खेतों की कटाई आदि के अतिरिक्त रेलवे और खानों में भी बहुत से चीनी मज़दूर काम करते थे। चीन की अपेक्षा मंचूरिया में अधिक मजदूरी मिलती थी। १९०५ ई० से जापान ने दक्षिणी मंचूरिया रेलवे को सँभालने में बड़ी उन्नति यहाँ की। शासन व्यवस्था भी अधिक अच्छी थी। अतः यहां प्रतिवर्ष तीन-चार लाख चीनी लोग बसने के लिये आने लगे। १९१५ ई० में यहां ५ लाख चीनी आये। १९२६ में ६ लाख चीनी यहां बसने के लिये आये। १९२७ में और अधिक लगभग १० लाख चीनी आये। कुछ लोग स्थल मार्ग से आते हैं। कुछ लोग समुद्री मार्ग से आकर डेरियन (रूसी डालनी) बन्दरगाह में उतरते हैं। वहां से वे रेल द्वारा या पैदल उत्तर की ओर जाते हैं। पांच छः लाख मनुष्यों को रेल में स्थान मिलना कितना कठिन हो जाता है। जैसे माघ मेला के समय अपने यहां गाड़ियां बढ़ा दी जाती थीं वैसे ही इन नवागन्तुकों को ऊपर उत्तर की ओर ले जाने के लिये विशेष गाड़ियां रहती हैं। बहुत से लोग इतने निर्धन होते हैं कि रेल का किराया नहीं दे सकते हैं। वे ४००

मील की यात्रा पैदल समाप्त करते हैं। ऊपर पहुँचने पर अक्सर उन्हें खानों और रेलवे में मजदूरी नहीं मिलती है। खानों में सीखे हुये मज़दूरों की आवश्यकता होती है। अतः बहुत मज़दूर खेतों में मज़दूरी करते हैं। कुछ लोगों को कोई काम नहीं मिलता है। उनकी दशा बड़ी शोचनीय हो जाती है। सस्ते मज़दूरों के मिलने और मंचूरिया की कृषि और खनिज सम्बन्धी उपज को जापान में शीघ्रता पूर्वक ले जाने के लिये जापानियों ने मंचूरिया में रेलवे लाइनों का जाल सा बिछा दिया। इस समय यहां ४००० मील से अधिक रेलवे लाइनें हैं। जिन लोगों को कहीं मज़दूरी नहीं मिलती है उनमें कुछ लोग उजाड़ भूमि में खेती करने लगते हैं। हार्बिन में कृषि विभाग का कार्यालय है। यहां नवागन्तुकों को बतलाया जाता है कि कहां मुफ्त या बहुत कम लगान पर भूमि खाली है। उपनिवेशों के बसाने में सुविधा पहुँचाने के लिये सड़कें भी बनाई गई हैं। सड़कें अधिक अच्छी नहीं हैं। शीतकाल में जब भूमि जम कर कड़ी हो जाती है तभी उन पर दो पहिये वाली भारी गाड़ियां आसानी से चल सकती हैं। उत्तरी मंचूरिया में $\frac{1}{4}$

जनसंख्या के पास खेत नहीं है। कुछ लोगों के पास बहुत छोटे खेत हैं। कुछ लोगों के पास कई एकड़ के खेत हैं। यह लोग अपनी समस्त भूमि को जोत बो नहीं पाते हैं। कुछ लोग आधा बटाई पर खेती कर लेते हैं।

नगर

मुकडन—मंचूरिया राज्य बड़ी तेज़ी से बढ़ा। सोलहवीं शताब्दी तक मंचू राज्य का कोई चिन्ह न था। मंचू लोग गुफाओं में रहते थे। वे मंचूरिया में रहने वाली दूसरी जातियों से प्रायः लड़ते रहते थे। १५५९ ई० में नूराहचू का जन्म हुआ। कुछ समय में वह छः गांवों का सरदार बन गया। १६१६ ई० में उसने कई जातियों को जीत कर मंचू राज्य की नींव डाली। वह पिंग (वीर) मिंग (प्रतिभाशाली) कहलाने लगा। उसकी विजयों से चीन के सम्राट को भी डर लगने लगा।

१६१७ ई० में मुकडन के पूर्व में उसने चीनियों

पर आक्रमण किया। पांच दिन की घमासान लड़ाई में ४५,००० चीनी सिपाही मार डाले गये। एक महीने विश्राम लेने के बाद उसने मुकडन और ल्याओ यांग को जीत लिया। मुकडन में उसने अपना राजमहल बनवाया। यहीं उसकी राजधानी बनी। उसने अच्छा शासन किया। १६२६ ई० के युद्ध में चीनी सेनापति ने प्रथम बार तोपों का प्रयोग किया। इससे नूरहचू की हार हुई। कुछ ही समय में वह मर गया। वह प्रायः टैइत्सू (महान् पूर्वज) कहलाता था। नूरहचू मुकडन के पूर्व में फूलिंग मकबरे में गाड़ा गया। १६४४ ई० में उसका पौत्र चीन का सम्राट बन गया। जिस समय मंचू लोगों ने चीन को जीता उस समय वे असभ्य घुमक्कड़ थे। सभ्य और शिक्षित चीनी लोग उनसे घृणा करते थे पर उन्हें मंचू शासकों की आज्ञा माननी पड़ती थी। वे चीन में चारदीवारी वाले नगरों में रहने लगे। इस प्रकार दक्षिणी मंचूरिया प्राचीन समय से प्रधान चीन का अंग बना रहा। इस समय भी मुकडन एक चीनी नगर जान पड़ता है। मुकडन की चारदीवारी इसके द्वार, नगाड़े का बुर्ज आदि पेकिंग के समान हैं।

देश दर्शन

मुकडन के बाजार में मछली, मृग चर्म, जूता, मणि-माणिक्य आदि तरह तरह के पदार्थ मिलते हैं।

मुकडन में फूलिंग के मकबरों को देखने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। नगर के बाहर दूर दूर तक कब्रें फैली हुई हैं। मकबरों के समीप सुन्दर वृक्ष हैं। रूसी जापानी युद्ध में दीवार को गोलियों से काफी हानि पहुंची। इसके द्वार पर हरे खपरैल हैं। भीतर बहुत पुराने वृक्ष हैं। यहीं पत्थर की पशुओं की विशाल मूर्तियां बनी हैं।

मुकडन का राजमहल भी देखने योग्य है। यह चीनी ढंग का बना है। इसकी दीवारें लाल हैं। छत सुनहली है। महल में कई आंगन हैं। प्रत्येक आंगन के अलग कमरे हैं। एक से दूसरे को जाने के लिये जीने बन है। एक कमरे में प्राचीन शाही वस्त्र कुछ खज़ाना और कला पूर्ण वर्तन बन्द हैं। मुकडन का मिशन अस्पताल चीनी और जापानी सहायता से बना है नरक के मन्दिर में पापी आत्माओं को ताड़ना देने के विविध दृश्य दिखाये गये हैं।

मुकडन सदियों तक मंचू राजाओं और चीन के

सूबेदारों की राजधानी रहा। इसकी पुरानी चारदीवारी टूट फूट जाने पर भी इस समय शानदार है। शहर से कुछ मील की दूरी पर प्रसिद्ध मकबरे हैं। यहीं १६०५ में १०० मील लम्बी पंक्ति में रूसी और जापानी सेनाओं के बीच में युद्ध हुआ था। शहर के भीतर विशाल पक्की सड़कें हैं इन पर रात में बिजली की रोशनी होती है। यहां ट्रैम कार और मोटर दौड़ा करते हैं। शहर में तार और टेलीफोन है। स्टेशन है। मुकडन कई रेल मार्गों का केन्द्र है। यहां से डेरियन को जाने वाला मार्ग सर्व प्रसिद्ध है। इसकी जनसंख्या लगभग पांच लाख है। इस समय यह मंचूरिया को राजधानी नहीं है। फिर भी यह देश का सबसे बड़ा और सबसे अधिक प्रसिद्ध नगर है।

ल्याओ यांग ल्याओ टांग प्रान्त की प्राचीन राजधानी था। (इसका अर्थ है ल्याओ नदी का किला) यह मंचूओं का एक बड़ा सुन्दर नगर है। चारदीवारी के भीतर बेर, नाशपाती, आड़ू आदि के पेड़ हैं। पहले यह चीनी नगर था। जब मंचू लोग इसे न ले सके तो उन्होंने नदी के दूसरे किनारे पर नया (ल्याओ यांग)

नगर बसाया। नगर में प्रवेश करने के लिये पांच द्वार हैं। कोरिया द्वार से कोरिया के राजदूत कर लाया करते थे। इस द्वार से नदी का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। पहाड़ियां कुछ दूर हैं। पूर्वी दीवार के ठीक बाहर लयाओ नदी बहती है। पास ही दूसरे किनारे को जाने के लिये घाट है। नदी के किनारे एक दम सपाट हैं। यहां रूसियों ने मज़बूत किलेबन्दी की थी। रूसी जापानी युद्ध में ७ दिन के भीषड़ संग्राम के बाद जापानी सेना इस नगर में घुस पाई थी। सिपाहियों को खड़ी फसल के समान काटना पड़ा था। इस युद्ध में २५,००० सिपाही खेत रहे। जापानी सेनापति कुछ मील की दूरी पर एक मन्दिर में बैठा हुआ युद्ध संचालन कर रहा था। उसके पास रणक्षेत्र के समाचार टेलीफोन द्वारा पहुंचते रहते थे। वह इतनी दूर बढ़ आया था कि पीछे से उसके पास रसद नहीं आ सकती थी। इसी से विजयी होने पर भी वह रूसियों को बहुत दूर तक खदेड़ न सका। यहीं लार्ड किचनर ने भारतवर्ष से ४० अँग्रेज़ सैनिक अफसर रणक्षेत्र देखने के लिये भेजे थे। जापानी अफसर प्रति दिन रणस्थल पर भाषण देते

थे। जापानी सिपाही अपने साथ बहुत थोड़ा सामान रखते थे। ज्वार, बाजरा की १५ फुट ऊँची खड़ी फसल ने घुड़सवारों की सेना को व्यर्थ सा बना दिया था। रूसियों ने घोड़ों से विशाल बेलन खिंचवा कर इसे कुचलवा दिया था।

ल्याओ यांग में एक पहाड़ी के ऊपर (लोमड़ी का) सुन्दर मन्दिर बना है। ऊपर जाने के लिये सीढ़ियों बनो हैं। (यहां कई स्थानों पर लोमड़ी की पूजा होती है) पर प्रधान मन्दिर बुद्ध भगवान का था। पुजारी लोग रोटी और लोबान मूर्ति के सामने चढ़ाते हैं। पास वाले कमरे में लोमड़ी की तीन मूर्तियां थीं। उन्हें वस्त्रों से सजाया गया था। ऊपर सर्प के आकार की एक विशाल (६० फुट लम्बी) पतंग उड़ती थी। यहां बुद्ध भगवान के और कई मन्दिर हैं। एक मन्दिर यमराज का है। इसमें नरक को यातनाओं के चित्र खिंचे हुये हैं। ताओ मत के मन्दिरों में स्त्रियों को भीतर जाने की आज्ञा नहीं है।

न्यूच्वांग नगर मंचूरिया का व्यापारिक द्वार है। यह ल्याओतुंग खाड़ी से ३० मील की दूरी पर

न्याओ हो नदी के किनारे पर स्थित है। वर्षा ऋतु में इसके पड़ोस की निचली भूमि में गहरा दलदल हो जाता है। पर इसके पड़ोस की भूमि बड़ी उपजाऊ है। अतः इस बन्दरगाह को बाहर भेजने के लिये बहुत सा सामान मिल जाता है। जब मंचूरिया पर जापानी अधिकार नहीं हो पाया था तो उन्होंने साउथ मंचूरियन रेल द्वारा डेरियन के व्यापार को बढ़ाने और न्यूच्यांग के व्यापार को घटाने के लिये न्यूच्यांग आने वाले माल पर रेल का अधिक भाड़ा लेना आरम्भ कर दिया था। ज्वार के समय १६ फुट गहरे पानी में चलने वाले जहाज़ यहां तक आ सकते हैं।

अनतुंग नगर यालू नदी के किनारे पर स्थित है। यहां रेल के पुल बन जाने से नगर का महत्व बढ़ गया। पर इसके बन्दगाह को भारी धक्का पहुँचा। बाढ़ के समय यहां ४० फुट ऊँची बाढ़ आती है। अन्तुग लकड़ी के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। यह रेशम के कारबार का भी केन्द्र है।

चांगचुन पहले एक छोटा गांव था। रूसो जापानी युद्ध के बाद यह तेज़ी से बढ़ा। यहां जापान द्वारा नियन्त्रित

साउथ मंचूरियन रेलवे समाप्त होती थी और रूसी स्टेट रेलवे आरम्भ होती थी। रूसी और जापानी दोनों ही की दृष्टि इस नगर पर थी। दोनों ही महत्व का सामान यहां लाया करते थे। चांग चुन के पड़ोस में बीसियों मील तक उपजाऊ भूमि में सोया बीन की खेती होती है। यह सब सोयाबीन यहीं से बाहर भेजा जाता है। यह एक प्रकार से संसार का सोयाबीन नगर है। बाहर भेजने के समय इसके पड़ोस की सूखी धरती पर सोयाबीन के विशाल ढेर बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं। प्रति वर्ष यहां से प्रायः ४ लाख टन सोयाबीन कोरिया, चीन, जापान और योरुप को जाता है।

हार्बिन या खार्बिन नगर विशाल सुंगारी नदी पर स्थित है। इस नगर को रूसियों ने बनाया है। यह व्लाडीवोस्टक से आने वाली ट्रान्स साइबेरियन रेलवे की प्रधान लाइन पर स्थित है। यहां से एक लाइन दक्षिण की ओर मंचूरिया होकर पोर्ट आर्थर और डेरियन को जाती है। इस प्रकार कोरिया उत्तरी चीन और मंचूरिया का समस्त व्यापार हार्बिन में केन्द्रित होता है। जब वर्ष में ६ महीने तक व्लाडीवोस्टक

बन्दरगाह बरफ से जम जाता है तब जापान की ओर से आने वाला व्यापार इस कमी को पूरा कर देता है। जो स्थान सोयाबीन के लिये चांगचुन का है वही महत्वपूर्ण स्थान आटा, घोड़े, ढोर और भेड़ के लिये हार्बिन का है। उत्तरी मंचूरिया के अपार प्रेरी प्रदेश में लाखों मन गेहूँ पैदा होता है। इस गेहूँ को पीसने के लिये यहां आटा पीसने की विशाल चक्कियां हैं। प्रति दिन २५,००० मन आटा पिसता है। स्टेपी प्रदेश के घुमक्कड़ मंगोल लोग अपनी भेड़ और दूसरे पशुओं को बेचने के लिये यहां लाया करते हैं। हार्बिन इनके लिये अच्छी मंडी है। यहां चुकन्दर की शक्कर भी बनती है। पेतूना नदी में यहां तक स्टीमर नहीं आ सकते हैं पर रेलवे का पुल बन जाने से हार्बिन का महत्व अधिक बढ़ गया है। इसके पड़ोस में कांगयाओ में कोयले की खानें हैं। मुकडन के बाद मंचूरिया भर में दूसरा महत्वपूर्ण स्थान हार्बिन है। यहां कई रेलवे लाइनें मिलती हैं। इसकी जनसंख्या लगभग ४ लाख है। पुराना शहर, नया शहर, बन्दरगाह और चीनी मुहल्ला इसके ४ बड़े भाग हैं। क्वानचेंग नगर रेलवे जंक्शन

और मंचूकुओ प्रजातन्त्र की राजधानी है। यहां से एक लाइन हार्बिन और दूसरी लाइन किरीन को गई है।

किरोन, चिलीन या क्लिीन नगर इसी नाम के प्रान्त की राजधानी है। क्लिीन शब्द का अर्थ है खुला हुआ वन। सचमुच खेतो के लिये बहुत सा वन साफ कर लिया गया है। यह गेहूँ, सोयाबीन का प्रसिद्ध केन्द्र है। यहां नावें भी बनाई जाती हैं। यहां तक सुंगारो नदी में छोटे छोटे स्टीमर आ सकते हैं चांगपाईशान (पर्वत) के वन की लकड़ी यहां तक आती है। नगर की जनसंख्या सवा लाख है।

पोर्ट आर्थर या लूशुन अपने किलों और वन्दरगाह के लिये प्रसिद्ध है। रूसी जापानी युद्ध ने इसे अमर बना दिया। युद्ध के अन्त में जापानियों को कई किले बड़ी अच्छी हालत में मिल गये इसमे उन्हें इस नगर की किले-बन्दी पर अधिक नहीं खर्च करना पड़ा। इस बार १६४५ (सितम्बर) में उन्हें यह बन्दगाह छोड़ना पड़ा। शिशिहर नगर नोनी नदी के किनारे पर उस स्थान पर बसा है जहां तक इसमें नावें आ सकती हैं। यहाँ कई रेलों का जंकशन है। नदी पर मज़बूत पुल बना है। यह बहुत समय तक मंचू जाति वालों की राजधानी रहा। कुछ

समय तक यहां के जेल में चोर अपराधी रहते थे। नगर की जनसंख्या लगभग १ लाख हैं।

चिनचाओ नगर—मुकडन के दक्षिण-पश्चिम में और क्यालुन उत्तर में प्रसिद्ध नगर हैं। सिंचेंग का बड़ा नगर सुंगारी के पश्चिमी मोड़ पर स्थित है। डैरियन मंचूरिया का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इसे रूसियों ने बसाया था। उस समय इसका नाम डालनी थी। फिर यह जापान के हाथ में चला गया। अभी यहां फिर रूस का अधिकार हो गया। यहां २५००० टन भार के जहाज़ आ सकते हैं। मंचूरिया का ६० प्रतिशत व्यापार इस अकेले बन्दरगाह द्वारा होता है। इसकी जनसंख्या ४ लाख है।

मंचूरिया के रेल मार्ग

मंचूरिया और चीन का पुराना सम्बन्ध है। चीन लोग यहां अधिकाधिक संख्या में बस गये। प्राकृतिक सम्पत्ति के कारण मंचूरिया पर रूस और जापान दोनों ही की लोलुप दृष्टि रही। सीमा के समीप स्थित होने के कारण मंचूरिया का सैनिक महत्व भी दोनों देशों के

लिये बहुत अधिक था। चीन इस समय कुछ निर्बल था। अतः योरुप की महा शक्तियां पहले चीन में अपना प्रभाव बढ़ाने और फिर इसे अफ्रीका की तरह बांट लेने की धुन में थी। रूसी जार मंचूरिया को अपना पूर्वी द्वार बनाना चाहता था। जापान यहां अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये अपार भोजन-भंडार देख रहा था। रूस और जापान का प्रथम संघर्ष ल्याओटंग प्रायद्वीप के लिये आरम्भ हुआ। ल्याओटंग मंचूरिया का दक्षिणी द्वार है। यह चीन की राजधानी पेकिंग पहुँचने के लिये समुद्री द्वार का भी नियन्त्रण करता है। इस पर विदेशी अधिकार हो जाने से चीन के लिये सदा संकट रहने की सम्भावना थी। १८९४ में युद्ध में चीन को हराने के बाद जापान ने यालू नदी के मुहाने से ल्याओ नदी के मुहाने तक ल्याओ टंग प्राय द्वीप पर अधिकार करना चाहा। पर फ्रांस की सहायता से रूस ने जापान को यह प्रदेश छोड़ने के लिये विवश किया। फिर १८९८ ई० में रूस ने चीन से इसी प्रायद्वीप के सिरे पर पच्चीस वर्ष के पट्टे पर क्वांटंग प्रायद्वीप ले लिया। यहीं रूस ने पोर्ट आर्थर में मज़बूत किले बनाये और

डाल्नी (डेरियन) बन्दरगाह को व्यापारिक केन्द्र बनाया। १६०४-५ में रूस और जापान में युद्ध हुआ। जापान की विजय हुई। इसका फल यह हुआ कि क्वांटंग प्राय-द्वीप (पोर्ट आर्थर और डालनी बन्दरगाह) जापान को मिल गये। रूस ने पोर्ट आर्थर तक जो पूर्वी चीनी रेलवे बनाई थी उस पर भी जापान का अधिकार हो गया। इससे दक्षिणी मंचूरिया में जापान और उत्तरी मंचूरिया में रूस का महत्त्व बढ़ गया। साउथ मंचूरियन रेलवे और पूर्वी चीनी रेलवे नाम के लिये कम्पिनी के रेलवे लाइनें थीं। वे क्रमशः ६६ और ८० वर्ष के पट्टे पर थी। ३६ वर्ष के बाद चीन की सरकार इन्हें मोल भी ले सकती थी। पर वास्तव में इन रेलवे लाइनों पर रूस और जापान का अधिकार था। वे दोनों इन लाइनों द्वारा मंचूरिया पर अपना अपना प्रभाव बढ़ा रहे थे। १६१५ में अपनी २१ मांगें चीन पर लाद कर मंचूरिया पर जापान ने खुल्लमखुल्ला अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहा। आरम्भ में दब जाने पर भी आगे चल कर अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति से लाभ उठा कर चीन ने इन मांगों को टाल दिया। कुछ ही समय में चीन में गृहकलह

फैली। इससे लाभ उठा कर जापान ने रेलवे क्षेत्र में प्रबल सेनाओं का रखना आरम्भ कर दिया। जब नानकिंग में चीन की राष्ट्रीय सरकार जम गई तब जापान ने घोषणा की कि मंचूरिया में शान्ति स्थापित हो जाने पर जापान को सेना रखने की आवश्यकता न पड़ेगी। चीन की राष्ट्रीय सरकार में जब बल बढ़ा तो चीन को बांटने की बात तो दूर रही उल्टा चीन मंचूरिया की रेलवे लाइनों पर अपना अंकुश रखने लगा। सब को आशा होने लगी कि १९३२ के बाद मंचूरिया की रेलवे लाइनें चीन की राष्ट्रीय सरकार मोल ले लेगी पर १९३१ में जापान ने मंचूरिया पर चढ़ाई करके वहां चीन की सत्ता नष्ट कर दी और मंचूकुओ नाम से वहां स्वतन्त्र पर वास्तव में अपना पिट्ठू प्रजातन्त्र स्थापित किया। १९४५ सितम्बर मास में जापान को आत्मसर्पण करना पड़ा और मंचूरिया पर फिर रूसी प्रभुत्व हो गया।



मंचूरिया का आर्थिक विकास

किसी देश का आर्थिक शोषण करने के लिये पूंजीपति राज्य परोपकारी बनकर पहले अपनी पूंजी उस देश में रेलवे कारखानों आदि में लगाते हैं। फिर वे इनके द्वारा उस देश का पैसा लगातार अपने देश में खींचते रहते हैं। जापान ने मंचूरिया की खनिज रेल और वन सम्पति से लाभ उठाने के लिये वहां उसने लगभग साढ़े तीन अरब रुपया लगाया। इनमें रेलवे प्रधान है। रेलवे द्वारा व्यापार का सामान बन्दरगाहों तक पहुंचाने में सहायता मिलती है। साथ ही चीनी कुलियों को भीतरी भागों में शीघ्रता पूर्वक पहुँचाया जा सकता है। रेलवे लाइनों के दोनों ओर काफी चौड़ी भूमि इन्हीं कम्पिनियों के हाथ में हैं। इसमें से खनिज निकाले जा सकते हैं। वृक्ष काटे जा सकते हैं और फसल उगाई जा सकती है। जहां जहां रेलवे लाइनें पहुँची वहां वहां उपनिवेश भी बस गये। मंचूरिया की प्रधान लाइन चीनी पूर्वी रेलवे है जो उत्तर में मंचौली से सुइफेनहो तक जाती है। सुइफेनहो दक्षिणी मंचू-

रिया में व्लाडीवोस्टक के उत्तर में स्थित है। यह चाप प्रत्यंचा (कार्ड) के रूप में सीधे छोटे मार्ग से जाती है। ट्रान्स साइबेरियन रेलवे चाप या धनुष के आकार में लम्बे मार्ग से जाती है। ट्रान्स साइबेरियन रेलवे नदी की उत्तरी सीमा के बाहर बाहर ही जाती है। इसके साथ समकोण बनाती हुई साउथ मंचूरियन रेलवे चांग चुन से डेरियन को जाती है। हार्बिन से जाने वाली एक रेलवे शाखा लाइन द्वारा यह चीनी पूर्वी रेलवे से मिली हुई है। हार्बिन उत्तरी मंचूरिया का प्रधान रेलवे जंकशन है। दक्षिणी मंचूरिया का प्रधान रेलवे जंकशन मुकडन है। मुकडन में साउथ मंचूरियन रेलवे की प्रधान लाइन में अन्तुंग से आने वाली शाखा लाइन मिलती है। अन्तुंग में कोरिया की रेलवे आकर मिलती है। दक्षिण-पश्चिम की ओर पेकिंग से आने वाली चीनी रेलवे मुकडन से आकर मिलती है। मंचूरिया के मार्ग से ही चीनी रेलवे का योरुप की रेलों से सम्बन्ध है। इन प्रधान लाइनों के अतिरिक्त जापान ने मंचूरिया में और कई लाइनें बना डालीं। एक प्रसिद्ध लाइन मुकडन और चांगचुन के बीच में सूपिंगकाई स्थान से

आरम्भ होती है। यह लाइन ताओ नोनफू होती हुई शिशिहर के पास अंगांचो जंक्शन में पूर्वी चीनी रेलवे से मिल जाती है। यह लाइन मध्यवर्ती मैदान कृषि और व्यापार की वृद्धि में सहायता देती है। पेकिंग-मुकडन रेलवे मुकडन के आगे पहले हेलुंग तक बढ़ा दी गई। फिर किरीन से मिला दी गई। इनके अतिरिक्त मंचूरिया में और कई लाइनें बन गई हैं। इससे यहां रेलवे लाइनों का जाल सा बिछ गया है। इस समय इस देश में समस्त लाइनें ८००० मील लम्बी है।

(मार्को पोलो के समय में) तारतारों का रहन सहन

तारतार लोगों ने अपने समय में संसार को दहला दिया था। उनका साम्राज्य अपूर्व था। उन्होंने बैल के चमड़े का बना हुआ अपना विजयी झंडा योरुप और एशिया के प्रायः सभी देशों पर फहराया था। कहते हैं उनके केवल एक नेता चिंगेज़ खां ने ४५ लाख मनुष्यों को मरवा डाला था।

मंचूरिया-दर्शन

यह तारतार लोग चीन के उत्तर में जंगली घुमक्कड़ जीवन बिताते हैं। वे शीतकाल मैदान में बिताते हैं जहां गरमी रहती है और ढोरों को चरने के लिये घास मिलती है। गरमी की ऋतु में वे ऊँची घाटियों और पहाड़ियों पर चढ़ जाते हैं। यहां उन्हें जलाने के लिये लकड़ी, चराने के लिये घास और पीने के लिये पानी मिलता है। यहां गरमी भी बहुत कम पड़ती है।

इनके घर गोल होते हैं और लकड़ियों के बने होते हैं। वे नमदे से छाये रहते हैं। लकड़ी का ढांचा बहुत हलका होता है। अतः जहां यह लोग जाते हैं वहीं अपना डेरा (घर) भी ले जाते हैं। वे डेरे का द्वार सदा दक्षिण की ओर रखते हैं। वे अपनी गाड़ियों को भी नमदे से ऐसा ढक लेते हैं कि एक बूंद भी पानी भीतर नहीं घुसता है। स्त्री और बच्चे इन गाड़ियों में बैठ कर यात्रा करते हैं। इन्हें ऊँट या बैल खींचते हैं। सामान मोल लेने या बेचने का काम स्त्रियां करती हैं। पुरुष शिकार करते हैं या सिपाही का काम करते हैं। इनका निर्वाह दूध और मांस से होता है। मांस के लिये वे जंगली पशुओं का शिकार करते हैं अथवा अपने पालतू पशु

का वध कर लेते हैं। वे कुत्ते, चूहे और घोड़े का भी मांस खाते हैं। वे घोड़ी का दूध बड़े चाव से पीते हैं।

उनका विश्वास है कि स्वर्ग में परमेश्वर रहता है। लोबान चढ़ा कर वे प्रति दिन उसकी उपासना करते हैं। वे कुछ देवताओं को भी मानते हैं। वे गुड़ियों के समान नमदे और कपड़े से देवताओं की मूर्तियां बनाते भोजन के समय वे देवी देपताओं को भी भोजन चढ़ाते हैं।

धनी लोग सोना लगे हुये रेशम के कपड़े पहनते हैं। इसमें लोमड़ी आदि का मुलायम और कीमती नमदा लगा रहता है। उनके युद्ध का सामान बड़ा मूल्यवान होता है। युद्ध में वे धनुषबाण, तलवार और गदा का प्रयोग करते हैं। धनुषबाण चलाने में वे बड़े पक्के होते हैं। भीपर वे भैंस या दूसरे मज़बूत चमड़े का बख्तर पहनते हैं। वे वीर सिपाही और बड़ी सहनशक्ति वाले होते हैं। काम पड़ जाने पर वे एक महीने तक अपनी घोड़ी के दूध को छोड़ कर बिना भोजन के रह सकते हैं। उनके घोड़े भी मैदान की घास चर कर अपना पेट भर लेते हैं। उनके लिये अलग चारा या रसद की

आवश्यकता नहीं पड़ता है। घोड़ा अपने स्वामी का बड़ा आज्ञाकारी होता है। कभी-कभी सवार रात भर घोड़े की पीठ पर रहता है और घोड़ा घास चरता हुआ अपना पेट भरता रहता है। संसार में कोई दूसरे सिपाही इनके बराबर थकावट और कष्ट नहीं कर सकते हैं। न इतने सस्ते होते हैं। देशों की विजय करने में यह सर्वोत्तम होते हैं। इसी से इन्होंने संसार के इतने बड़े (आधे से अधिक) भाग पर अधिकार कर लिया था।

एक प्राचीन लेखक लिखता है:—

"जब कोई तारतार राजा लड़ाई पर जाता है तो वह अपने साथ एक लाख घुड़सवार ले लेता है। वह प्रति १० मनुष्य के ऊपर एक अफसर नियुक्त करता है। एक हजार के ऊपर वह इनसे बड़ा एक अफसर नियुक्त करता है। फिर १० हज़ार के ऊपर एक एक अफसर नियुक्त होता है। इस प्रकार किसी अफर को १० से अधिक मनुष्यों को आज्ञा नहीं देनी पड़ती है। वह स्वयं १० अफसरों को आज्ञा देता है। सिपाही अपने अफसरों की आज्ञा मानते हैं। इससे इनकी सेना में बड़ा सुन्दर संगठन और शासन रहता है। जब कभी

कोई सेना कूच करती है तो २०० घुड़सवार निरीक्षण करने के लिये आगे भेजे जाते हैं यह सदा आगे ही रहते हैं। २०० मनुष्य पीछे की देख भाल करते हैं। २०० दाहिने और २०० मनुष्य बायें पक्ष की देख भाल करने के लिये प्रधान सेना से पृथक रहते हैं। चारों ओर चौकसी रहने से उनकी सेना पर शत्रु अचानक छापा नहीं मार सकता।

"जब वे बहुत दूर की चढ़ाई पर जाते हैं तो वे अपने साथ बहुत सा सामान नहीं रखते हैं। वे अपने साथ दूध रखने के लिये चमड़े के २ थैले ले लेते हैं उनके साथ मांस पकाने के लिये मिट्टी की एक हांडी और वर्षा से बचने के लिये एक छोटा डेरा होता है। काम पड़ने पर वे घोड़े की पीठ पर लगातार दस दिन तक बिना भोजन किये या बिना आग जलाये सवार रह सकते हैं। ऐसे अवसर पर वे अपने घोड़े की एक नस खोल कर उसका लोहू पीते रहते हैं। पेट भर जाने पर वे उसे फिर बन्द कर देते हैं। वे दूध को सुखा कर गाढ़ा कर लेते हैं। जब उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है तब वे इसे पानी में डाल कर चलाते रहते हैं जब यह घुल जाता है।

तब वे इसे पी जाते है। गाढ़ करने के लिये पहले दूध को उबालते हैं। जब मलाई ऊपर आ जाती है तब वे मलाई को उतार कर दूसरे बर्तन में रख लेते हैं। इससे वे मक्खन बना लेते हैं। बिना मलाई निकाले दूध ठोस नहीं होता है। मलाई निकले हुए दूध को वे धूप में रख कर सुखा लेते हैं। जब वे कहीं चढ़ाई करते हैं तब प्रत्येक मनुष्य अपने साथ पांच पांच सेर सूखा हुआ ठोस दूध ले लेता है। प्रातःकाल को प्रत्येक मनुष्य इसमें से पाव भर ठोस दूध निकालता है और पानी में घोलता है। घोलने के लिये उसे ठहरना नहीं पड़ता है। चपड़े के थैले में पानी और सूखा दूध मिला कर वह चलाता रहता है। कुछ समय में घोड़े के चलने से धक्का लगते लगते दूध भली भांति पानी में मिल जाता है। यही घुला हुआ दूध सिपाही का प्रधान भोजन है।

"शत्रु से युद्ध करते समय वे कभी शत्रु की सेना में नहीं घुसते हैं। वे लगातार घोड़े की पीठ पर सवार रहते हैं और शत्रु-सेना पर तीर छोड़ते रहते हैं। युद्ध स्थल से भागने में उन्हें लज्जा नहीं आती है। कभी-

कभी वे युद्ध स्थल से भागने का बहाना करते हैं। भागते समय वे मुड़कर पीछे पूंछ की ओर हो जाते हैं और और पीछा करने वाले शत्रु पर तीर छोड़ते रहते हैं इससे शत्रु सेना का संहार हो जाता है। इनके घोड़े ऐसे पक्के सीखे हुये होते हैं कि वे सवार का इशारा पाते ही एक दम कुत्ते की तरह जहां तहां तेज़ भाग जाते हैं। इस तरह रण स्थल से भागते हुये वे शत्रु का उसी तरह से संहार करते हैं जैसे एक स्थान पर जम कर और शत्रु के सामने लड़ कर कर सकते हैं। पीछा करने वाला शत्रु यह समझता है कि उसकी विजय हो गई पर पीछे भागते हुये तारतार लोग तीरों की बोछार छोड़ कर उसका नाश कर देते हैं। जब वे देखते हैं कि उन्होंने शत्रु के काफी घोड़े और सवार मार डाले तो वे सब के सब चिल्ला कर लौटते हैं। वे जम कर शत्रु का सामना करते हैं और कुछ ही समय में मार काट करके उस युद्ध स्थल से भगा देते हैं।

"जब कोई मनुष्य चोरी करता है तब अपराध के अनुसार चोर के सात, सत्रह, सत्ताइस, सैंतीस, सैंतालीस अथवा १०७ डंडे मारे जाते हैं। कभी-कभी चोर

चोट खा कर मर भी जाता है। पर यदि चोर घोड़ा चुराता है अथवा और कोई बड़ा अपराध करता है तब तलवार से काट कर उसके दो टुकड़े कर दिये जाते हैं। पर यदि वह चुराई हुई वस्तु का नौगुना मूल्य दे देता है तो वह छोड़ भी दिया जाता है। प्रत्येक स्वामी के घोड़े, ऊँट, बैल आदि पर उसका चिन्ह बना रहता है। फिर यह पशु बिना चरवाहे के चरने के लिये छोड़ दिये जाते है। चरते समय एक दूसरे के पशु मिल भी जाते हैं पर निशान होने के कारण वे फिर अलग कर लिये जाते हैं। भेड़ बकरियों को चरने के लिये चरवाहे नियुक्त रहते हैं। इनके पशु बड़ी अच्छी दशा में रहते हैं।"

लामा

तारतार लोगो में बौद्ध भिक्षु लामा कहलाते हैं। वे पगोडा में रहते हैं। इसका विश्वास है कि लामा अमर होता है। जब लामा एक शरीर छोड़ता है तब वह उसी समय पैदा होने वाले बच्चे का शरीर गृहण कर

लेता है। तार तार लोग अपने लामा को देवता के समान पूजते हैं। जब कभी कोई तारतार लामा के सामने अता है तब वह लामा को पृथ्वी पर गिर कर दंडवत प्रणाम करता है। लामा सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देता है। लामा प्रायः पीले रेशम से अपना शरीर ढांके रहता है। केवल सिर खुला रहता है। वह चांदी के गर्तनों में चाय पीता है। भोजन के समय पहले वे मूर्ति के सामने सूखे फल आदि चढ़ाते हैं। वह मांस और भात खाता है। भोजन समाप्त होने पर चाय फिर पी जाती है। लामा प्रायः मौन रहता है। वह बहुत कम बोलता है। आये हुये लोगों को ध्यान से देख कर वह कभी कभी मुस्करा देता है।

मठ में एक बड़ा लामा होता है। छोटे छोटे कई लामा होते हैं। मठ की दीवारों में धार्मिक चित्र खिंचे रहते हैं। यह लोग प्रार्थना पढ़ने और जप करने में अपना जीवन बिताते हैं।

मंचूरिया-दर्शन

पोर्ट आर्थर की विजय

दक्षिणी मंचूरिया पर रूस का बढ़ना ब्रिटेन को भी अच्छा न लगा। १९०२ में ब्रिटेन और जापान में सन्धि हुई कि यदि रूस के अतिरिक्त कोई दूसरा राज्य रूस की सहायता के लिये जापान से लड़ने के लिये तयार हो तो ब्रिटेन जापान की सहायता करे। दक्षिणी मंचूरिया में मुकडन आदि कई स्थानों पर लड़ाई हुई पर पोर्ट आर्थर की विजय जगत्प्रसिद्ध है। पोर्ट आर्थर के लिये कई घमासान चढ़ाइयां हुईं। एक लड़ाई का आंखों देखा वर्णन एक जापानी लफ्टेनेंट तादायोशी सकूराई इस प्रकार करता है। "मृत्यु का आलिंगन करने वाले सिपाहियों की टोली इकट्ठी हुई तो हम लोगों का यह निश्चय था कि हम लोग केवल मरने से न डरें वरन् मरने से न चूकें। हम लोगों का उत्साह बहुत बढ़ा हुआ था। टोकियो से युद्ध मन्त्री का तार (मैं तुम्हारी विजय के लिये प्रार्थना करता हूँ) हम सब को पढ़ कर सुनाया गया। इससे हम लोगों का उत्साह और अधिक बढ़ गया। पानलुंग शान के तार लगे ढालों पर हम लोग लाशों के ढेर को पार करते हुये

पहुँच गये। यहां पर मैंने कर्नल से बिदा ली। आगे बढ़ने में मेरा पहला कदम एक मुर्दे के सिर पर पड़ा। हम लोग उत्तरी किले और वांगताई पहाड़ी की ओर जा रहे थे। शत्रु की खाइयों में बम की लड़ाई हो रही थी। हमारी ओर से बम बड़े अच्छे ढंग से छोड़े जाते थे। जहां बम गिरते वहां एक दम विस्फोटक होता। तख्ते इधर उधर जा गिरते। बालू के बोरे फट जाते सिपाहियों के सिर इधर उधर उड़ने लगते और टांगें टूट कर अलग जा गिरतीं। लपट धुआं में मिल जाती। इसका लाल प्रकाश हम लोगों के चेहरों पर पड़ता था। रणपंक्ति में गड़बड़ी मच जाती। शत्रु ने निराश होकर इस स्थान को छोड़ा और पीछे भागा। हम लोग "आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, एक छलांग में पकड़ लो" के नारे लगाते साहस के साथ आगे बढ़े। मैंने चिल्ला कर कहा—साकूराई के सिपाहियो आगे बढ़ो। मार्ग देखने के लिये हम लोग खाईं के पीछे गये एक रोते हुए शब्द ने मुझे पुकारा। शब्द की ओर जाने पर मैंने कार्पोरल ईटो को रोते हुये पाया। पूछने पर उसने रो कर कहा—आप उच्च पद पर पहुँच गये। मैंने कहा इसमें रोने की क्या बात। तब

ईटो ने कहा हमारे कप्तान मर गये। यह सुन कर मैं (साकूराई) भी रोने लगा। मैंने मरे हुये कप्तान को छाती से लगाया। उसकी जेब से गुप्त नकशे को निकाल क मैं (साकूराई) ने घोषणा की कि अब से बारहवीं कम्पिनी को मैं आज्ञा दिया करूँगा। फिर मैंने कहा कोई घायल सिपाही कप्तान की लाश को पीछे ले जावे। घायल सिपाही कप्तान को उठा ही रहा था कि उसकी छाती में गोली लगी और वह भी कप्तान की लाश का सहारा लेकर सदा के लिये सो गया। फिर एक एक करके जो जो सिपाही कप्तान की लाश को उठाने जाता वह गोली खाकर मर जाता। मैंने ईटो को आज्ञा दी कि पंक्ति टूटने न पावे और मैं स्वयं रण पंक्ति के बीच में हो गया। अँधेरी रात में कोई चीज़ साफ़ नहीं दिखाई देती थी न यह जान पड़ता था कि हम लोग किधर जावें। उत्तरी किला और वांगताई पहाड़ी आकाश को छू रही थी। हम लोग कड़ाही के आकार वाले एक गडढे में थे। फिर भी हम साथ साथ आगे बढ़ रहे थे। बारहवीं कम्पिनी आगे बढ़ी। पंक्ति बनी रहे यह आज्ञा देकर मैं दाहिनी ओर मुड कर आगे बढ़ा। इतने में ईटो

शत्रु की गोली से मर गया। अँधेरे में चमकने वाले सिपाहियों के भालों की संख्या कम होने लगी। सिपाहियों का काला समूह जो चढ़ाई करने चला था उसमें से मुट्ठी भर सिपाही शेष रह गये। इतने में मुझे ऐसा जान पड़ा मानो मेरे किसी ने गदा मारा हो। मैं धरती पर गिर पड़ा मेरे दाहिने हाथ में गोली लगी। यह कलाई के पास टूट गया था। हाथ लटक गया था। इसमें लोहू बह रहा। मैंने जेब से एक पट्टी निकाल कर इसे तिकानी लकड़ी से बांध लिया। इसके ऊपर मैंने रूमाल लपेट लिया और गले में सूर्य का झंडा डाल कर हाथ को उसी पर लटका लिया। मैंने सूर्य के जापानी झंडे को शत्रु के किले पर लगाने का प्रण किया था। आगे देखने से पता लगा कि वांगताई पहाड़ी और मेरे बीच में केवल एक घाटी शेष है। मुझे प्यास लगी थी। मैंने कमर के पास पानी के डब्बे को टटोला तो देखा कि केवल चमड़े का तस्मा शेष है और डब्बा गिर गया है। एक एक करके सिपाहियों की आवाज़ कम हो रही थी। शत्रु के सिपाहियों की आवाज़

बढ़ रही थी। मैंने बायें हाथ में नंगी तलवार ली और वांगताई पहाड़ी पर चढ़ने लगा।

शत्रु की लम्बी और भारी तोपें ऊपर खड़ी थीं। मेरे बहुत ही कम सिपाही शेष रह गये थे। मैंने बचे हुए सिपाहियों को साथ आने के लिये कहा। बहुत ही कम ने उत्तर दिया। जब मैंने सोचा कि दूसरी सेनाओं की भी यही दशा हुई होगी तो मेरा हृदय फटने लगा। मरे हुये सिपाहियों का स्थान लेने के लिये दूसरे सिपाहियों के आने की कोई आशा न थी। इस लिये मैंने एक सिपाही को किले की दीवार पर चढ़ने और सूर्य भगवान का झंडा लगाने की आज्ञा दी। पर इतने ही में उसके गोली लगी और वह बिना कुछ कहे मर गया।

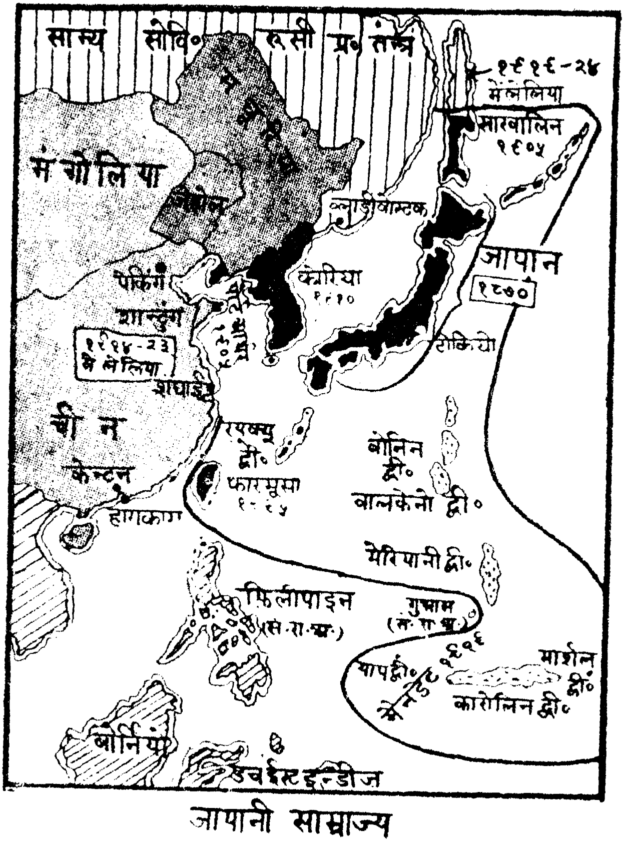
इतने ही में कोलाहल करते हुए शत्रु के सिपाहियों की एक टोली हमारे चारो ओर आ गई। हमारी संख्या बहुत कम थी और हम नीचे से आक्रमण नहीं कर सकते थे। अतः सपाट पहाड़ो पर हम लोग पीछे हटे। रूसी लोग हमारा पीछा करते हुये हम पर गोली चला रहे थे। मिट्टी की दीवार के पास पहुँच कर हम लोग शत्रु का सामना करने के लिये ठहर गये। यहां बड़ी गड़बड़ी

मची और नरक के समान मार काट हुई। संगीनें संगीनों पर लड़ रही थीं। इतने ही में शत्रु गोलियों की वर्षा करने के लिये मशीनगन ले आया। दोनों ओर मनुष्य घास के समान कट कर गिरने लगे। मेरे होश ठिकाने न रहे मुझे यह याद है कि मैं क्रोध से भर कर तलवार चला रहा था मैं यह भी जान रहा था कि शत्रु के कुछ सिपाही मेरी तलवार से कट कर गिर रहे हैं। तलवार और भालों की सफेद नोकें चमक रही थीं। गोलियों की भीषण वर्षा हो रही थी। चिल्लाते चिल्लाते मेरा गला बैठ गया मैं कुछ भी नहीं बोल सकता था। अचानक मेरी तलवार टूट गई। शत्रु के भाले ने मेरे बायें हाथ को भी आरपार कर दिया। मैं भूमि पर गिर पड़ा। मैं उठ न पाया था कि मेरी दहिनी टांग में गोली लग गई। हिम्मत करके मैंने उठने का प्रयत्न किया पर मैं लड़खड़ा रहा था और विवश होकर भूमि पर गिर पड़ा। एक सिपाही ने मुझे गिरते देख कर कहा लफ्टेनेंट साकूराई हम दोनों साथ साथ मरें। मैंने बायें हाथ से उसे गले लगाया। मैं शोकातुर होकर दांत पीस रहा था कि मैं हत्थमहत्था लड़ाई को अपने

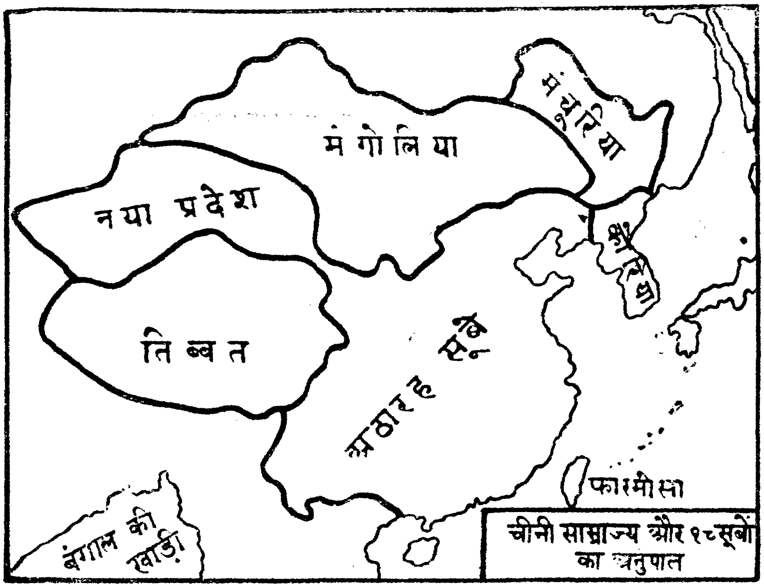
चारों ओर होते केवल देख रहा हूँ। मेरा मस्तिष्क एक पागल की तरह काम कर रहा था। मेरा शरीर एक इंच भी आगे नहीं बढ़ रहा था।

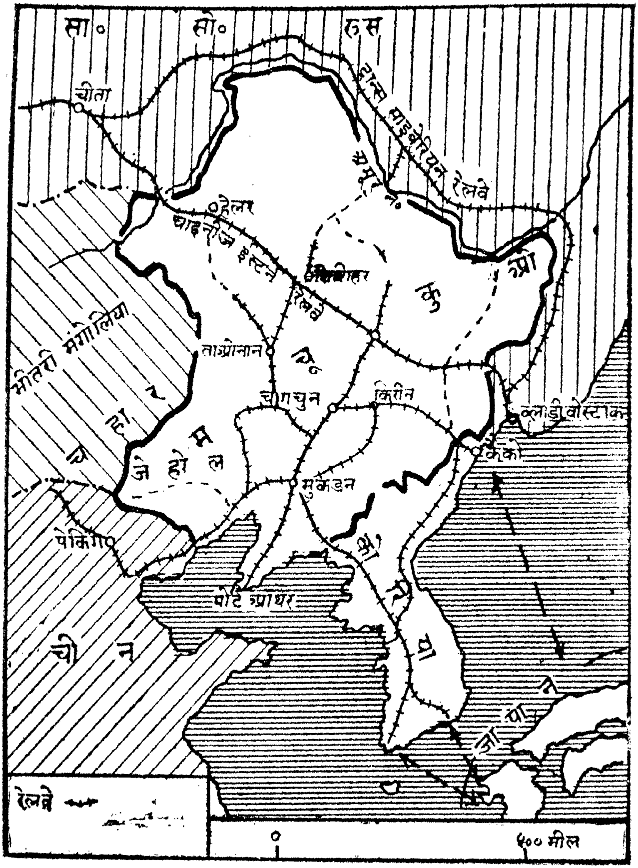
इसी प्रकार की घमासान लड़ाइयां होती रहीं। अन्त में १९०५ ई० को प्रथम जनवरी को रूसी सेनापति ने आत्म समर्पण करने के लिये सन्देश भेजा। दूसरे दिन दोनों ओर के अधिकार प्राप्त, प्रतिनिधियों का सम्मेलन हुआ। सन्धि की शर्तों पर हस्ताक्षर हो जाने पर पोर्ट आर्थर पर जापान का अधिकार हो गया।

पर १९४५ के सितम्बर मास में जापान को आत्म-समर्पण करना पड़ा और पोर्ट आर्थर पर फिर रूस का अधिकार हो गया।


साम्य सोवि० रूसी प्र० तंत्र
मंचूकुओ
मंगोलिया
जेहोल
पेकिंग
शान्टुंग
१९१४-२३ मैं लेलिया
शंघाई
चीन
केन्टन
हांगकांग
व्लाडीवास्तक
कोरिया
१९१०
जापान
१८७०
टोकियो
सारवालिन
१९०५
१९१९-२५
रयक्यू द्वी०
फारमूसा
बोनिन द्वी०
वालकेनो द्वी०
मेरियानी द्वी०
फिलीपाइन (स० रा० अ०)
गुआम (स० रा० अ०)
मार्शल द्वी०
यापद्वी०
कारोलिन द्वी०
बोर्नियो
डच ईस्ट इन्डीज

जापानी साम्राज्य

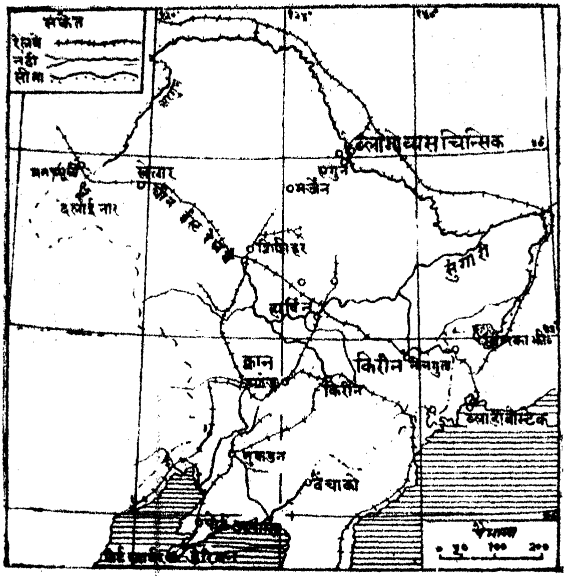

मंचूरिया
मंगोलिया
नया प्रदेश
तिब्बत
कोरिया
अठारह सूबे
फारमोसा
बंगाल की खाड़ी
चीनी साम्राज्य और १८ सूबों का अनुपात



सा० सो० रुस
चीता
ट्रान्स साइबेरियन रेलवे
हेलर
चाइनीज इस्टर्न रेलवे
भीतरी मंगोलिया
ताओनान
चांगचुन
किरीन
व्लाडीवोस्टाक
मुकडन
पेकिंग
पोर्ट आर्थर
चीन
कोरिया
रेलवे
० ५०० मील


साम्य० सोवि० रूसी प्रजा तंत्र
मंगोलिया
मनचूकुओ
भीतरी मंगोलिया
पेपिंग
(पेकिंग)
तिब्बत
नानकिंग
शंघाई
जापान
केन्टन
हांगकांग
ब्रह्मा
श्याम
नानकिंग सरकार
द० (केन्टन) विस्तार
जापानी सरकार
साम्य० सरकार
पहिले जो देश चीन के अधिकार में थे

चीन विच्छेद



संकेत
रेलवे
नदी
सीमा
हार्बिन
किरीन
किरीन
सुंगारी
मुकडन
पैमाना